जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिन्हें त्रिकाली सत् का परिचय नहीं, वे सत्पुरुष नहीं; उनकी संगति भी सत्संगति नहीं है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ : 13

वर्ष : 28, अंक : 7 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

सामूहिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

विदर्भ के 28 विभिन्न स्थानों पर

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर के अन्तर्गत नवनिर्मित महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्वप्रचार प्रसार समिति के तत्त्वावधान में नागपुर के समीपवर्ती विदर्भ के 28 स्थानों पर एक साथ 25 वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर शनिवार, 11 जून से रविवार, 19 जून 2005 तक आयोजित किया गया, जिसमें 55 विद्वानों के सानिध्य में लगभग 20,000 साधर्मियों ने धर्मलाभ प्राप्त किया एवं 2500 शिविरार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रमाणपत्र प्राप्त किये।

शिविर के माध्यम से * **नागपुर इतवारी** में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुरकला, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित साकेत जैन केसली, पण्डित प्रतीक जैन अशोकनगर, *__अकोला__ में पण्डित कोमलचंदजी जैन टड़ा, पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर, पण्डित धवलजी गाँधी नातेपुते, पण्डित संयमजी नागपुर, पण्डित सौधर्मजी लुहाड़िया अलीगढ, पण्डित ऋषभजी सेठी कोलकाता, * **मुर्तिजापुर** में पण्डित विजयजी आव्हाने, पण्डित निपुणजी टीकमगढ़, पण्डित आशुतोषजी मोदी, * **चंद्रपुर** में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित सुरेशजी काले, * **हिंगणघाट** में पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित सचिनजी गढी, * **पुलगॉव** में पण्डित रामनरेशजी शास्त्री खडैरी, पण्डित चिरागजी पाटनी कोलकाता, * **यवतमाल** में पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित कुणालजी जैन भिण्ड, *__हिवरखेड__ में पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुलतानपुर, *__बड़नेरा__ में पण्डित चेतनजी शास्त्री खड़ैरी, * **वरूड** में पण्डित भरतजी अलगौंडर, * **बुटीबोरी** में पण्डित अर्पितजी बड़ामलहरा, * **जामठी** में पण्डित एलमचंदजी गढखेड़ा, * **भंडारा** में पण्डित अनिलजी अलमान, * **व्रम्हपुरी** में पण्डित नितिनजी खड़ैरी, * **सिन्देवाही** में पण्डित शाश्वतजी जैन शहडोल, * **नाचनगॉव** में पण्डित रविन्द्रजी काले, * **वणी** में पण्डित अनेकांतजी शास्त्री उगार, * **कलमेश्वर** में पण्डित विजयजी बोरालकर, * **जरूड़** में पण्डित दीपकजी डांगे, *

(शेष पृष्ठ-4 पर ...)

कम्पिलजी एवं शौरिपुर के निकट 22 स्थानों पर

आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति फिरोजाबाद द्वारा भगवान विमलनाथ की 4 कल्याणक स्थली कम्पिलजी एवं नेमिनाथ की जन्मस्थली शौरिपुर के निकटवर्ती 22 विभिन्न स्थानों पर 5 से 13 जून, 05 तक एकसाथ शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर के माध्यम से इटावा, सिरसागंज, शिकोहाबाद, करहल, जसवंतनगर, भोगॉव, कुरावली, सकीट, अलीगंज, एटा स्वाध्याय भवन, एटा जैन नगर, एत्मादपुर, फरिहा, कोटला, रसूलपुर, सैमरा, हनुमानगंज (फिरोजाबाद), बरहन तथा कुर्राचित्तपुर में डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित वीरेन्द्रजी जैन बरा, पण्डित नवीनजी जैन बरा, पण्डित जितेन्द्रजी जैन सिंगोड़ी, पण्डित शचीन्द्रजी गढ़ाकोटा, पण्डित अनन्तवीरजी फिरोजाबाद, पण्डित सौरभजी गढ़ाकोटा, पण्डित संभवजी नैनधरा, पण्डित अनुरागजी फिरोजाबाद, पण्डित सचिनजी जबेरा, पण्डित धीरजजी जबेरा, पण्डित अरहंतजी फिरोजावाद, पण्डित विनयजी बूंदी, पण्डित सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित विपिनजी फिरोजाबाद तथा मंगलायतन से अनाक्रमजी, ज्ञायकजी, मयंकजी, अभिषेकजी, पुनीतजी आदि विद्वानों का लाभ मिला।

12 जून को श्रुतपंचमी के पावन प्रसंग पर श्रुतस्कन्ध विधान एवं जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। सभी स्थानों पर जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 600 प्राचीन ग्रथों की साजसज्जा की। इसके अतिरिक्त कण्ठ पाठ प्रतियोगिता के माध्यम से अनेक लोगों ने जिनवाणी को अपने कंठ में धारण किया।

14 जून को सेठ छिदामीलाल जैन मंदिर, फिरोजाबाद में शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज थे।

सम्पूर्ण शिविर डॉ. योगेशजी जैन एवं पण्डित नवीनजी पोद्दार के निर्देशन तथा पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी सिंघई, पण्डित अनन्तवीरजी के कुशल संयोजन में सम्पन्न हुआ। शिविर के मुख्यप्रभारी पण्डित अभिनवजी मोदी एवं पण्डित सोनूजी जैन खतौली थे।

शिविर में लगभग 10 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 3 हजार रुपयों के सी.डी. कैसेट्स बिके। ●

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

5 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

माँ और सरस्वती माँ

विराग धर्म का पिपासु और जिज्ञासु तो है ही। उसे जहाँ भी धर्म की बात पढ़ने-सुनने को मिलती, वह उसे न केवल पढ़ता-सुनता; बल्कि उस पर गहराई से विचार भी करता।

एक बार उसने विष्णु शर्मा द्वारा लिखी गई पंचतंत्र पुस्तक में एक श्लोक पढ़ा था ह्न

''तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुत्योर्विभिन्नः, नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणं।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुफायां, महाजनो येन गता स पंथः।।

इसका अर्थ यह है कि ह्न तर्क अप्रतिष्ठित है, सर्व मान्य कोई एक मुनि नहीं है जिसके वचन प्रमाण माने जा सकें। धर्म का तत्त्व मानो किसी गुफा में मुंह छुपाकर बैठ गया है; अतः अब तो जिस मार्ग से महापुरुष चलें वही धर्म का पंथ है।''

इस संदर्भ में विराग विचार करता है कि ''वर्तमान विश्व के लगभग छह अरब आदमियों में शायद ही कोई ऐसा हो जो किसी न किसी रूप में धर्म को न मानता हो। सभी व्यक्ति अपनी-अपनी समझ एवं श्रद्धा के अनुसार धर्म को मानते ही हैं।

इस दृष्टिकोण से देखें तो सभी व्यक्ति धर्मात्मा हैं। और सभी स्वयं को धर्मात्मा मानते भी हैं। धार्मिक आस्था के कारण पापी से पापी व्यक्ति भी पाप करने के पहले परमात्मा को जरूर याद करता है। यह तो पता नहीं कि वह कैसा धर्मात्मा है? जो परमात्मा को सर्वज्ञ मानता है, फिर भी उन्हीं के सामने खुलकर पाप करता है; जबकि एक साधारण पुत्र पिता के सामने बीड़ी-सिगरेट पीने से भी डरता है। क्या दुनिया में ऐसा भी कोई भगवान है जो पाप करने वाले की भी मदद करता है? खैर! जो भी हो, परन्तु वे नाम से तो धर्मात्मा हैं ही; क्योंकि वे किसी न किसी रूप में धर्म को तो मानते ही हैं न।''

विराग आगे सोचता है कि उपर्युक्त संदर्भ में एक बात यह भी विचारणीय है कि ह्न 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्नः' इस सत्य सूक्ति के अनुसार सारी दुनिया में जितने व्यक्ति हैं, उनमें सबके विचार भिन्न-भिन्न होते हैं, एक दूसरे के विचार परस्पर में एक-दूसरे से कभी नहीं मिलते। उनमें सम्पूर्ण रूप से समानता संभव ही नहीं है, क्योंकि प्रकृति से ही सबके सोचने का स्तर एवं उनके ज्ञान का स्तर समान नहीं होता।

इसी ध्रुव सत्य का प्रतिपादन करते हुए कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं ह्न

''हैं जीव नाना कर्म नाना लब्धि नानाविध कही।
अतएव ही निज-पर समय के साथ वर्जित बाद भी।।''

जगत में जीव नाना प्रकार के हैं, उनके कर्मों का उदय भी भिन्न-भिन्न प्रकार का है, उनके सबके ज्ञान का विकास भी एक जैसा नहीं है। अतः विचार भी एक जैसे नहीं हो सकते हैं।

यही कारण है कि जितने व्यक्ति, जितने वर्ग, जितनी जातियाँ, जितने उनके कर्म, उतने ही बन गये धर्म। इतना ही नहीं, एक ही व्यक्ति नोटों और वोटों के चक्कर में मानव सेवा-धर्म आदि अनेक नकली धर्म खड़े करके मानव का पोषण करने के बजाय उनका शोषण करता है। इस तरह धर्म का मूल स्वरूप ही गायब हो गया, बदल गया।

इन्हीं सब कारणों से मैं ही क्या, सम्पूर्ण शिक्षित युवा जगत धर्म के संबंध में किंकर्तव्य विमूढ़ सा हो रहा है; अतः जिसकी समझ में परम्परागत पूर्वाग्रहों वश जो बात जम गई, वही उसका धर्म बन गया।

इतना ही नहीं, मनःस्थिति तो यहाँ तक आ पहुँची है कि धर्म के नाम पर जो जैसा धर्माचरण करता है, वह उसे ही सही धर्म का स्वरूप समझता है और दूसरों से भी वही/वैसा ही धर्माचरण करने की अपेक्षा रखता है, अन्यथा अपने को धर्मात्मा और अन्यों को अधर्मात्मा घोषित करता रहता है, जबकि धर्म के वास्तविक स्वरूप से वह स्वयं भी अभी अनजान है।

विराग ने माँ से कहा ह्न 'मैंने एक बार यह सुना था कि ''धर्म तो वस्तु का स्वरूप है और वस्तु का स्वरूप बनाया नहीं जाता। वह तो अनादि-अनन्त-त्रिकाल आग की उष्णता और पानी की शीतलता की भाँति एकरूप ही होता है।

त्रिकाली स्वभाव सदा एकरूप ही रहता है, उसे पाने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता, बल्कि करना बंद करना पड़ता है अर्थात् अनादिकाल से वस्तु स्वरूप के अज्ञान के कारण जो हमारी परद्रव्य में कर्तृत्व बुद्धि है, उसे छोड़ना पड़ता है। जिस तरह पानी का स्वभाव ठंडा है उसे ठंडा रखने को और आग का स्वभाव उष्ण है उसे उष्ण रखने के लिए क्या करना पड़ता है? कुछ भी नहीं। इसी तरह आत्मा का स्वभाव जानना है, समता है, क्षमा है तो जानने के लिए और सहज समता रखने के लिए क्या करना पड़ता है, कुछ भी नहीं।''

माँ ने कहा ह्न ''बेटा ! तूने यह जो सुना-समझा है, बिल्कुल सही है।

जिस तरह आग का स्वभाव उष्ण है, उसी तरह आत्मा का स्वभाव जानना है, क्षमा, निरभिमान, निष्कपट तथा निर्लोभ है। ये ही आत्मा के धर्म हैं।

जगत में भी ऐसा कोई मजहब नहीं है, ऐसा कोई सम्प्रदाय नहीं है, ऐसा कोई जातिगत धर्म नहीं है जो क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि तथा अहिंसा-सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह को धर्म नहीं मानता हो तथा क्रोध-मान-माया-लोभ और मोह-राग-द्वेष तथा हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह को अधर्म न मानता हो। वस्तुतः ये ही धर्म/अधर्म हैं।''

यह सब सुनकर और उनके अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं प्रवचन आदि को देखकर विराग को ऐसा लगा कि ''माँ को धार्मिक ज्ञान बहुत है। हम

धर्म का स्वरूप समझने के लिए अपनी माँ को ही गुरु बना लें? माँ से बढ़कर अभी और कोई ज्ञानी-ध्यानी और विरागी नजर भी तो नहीं आता। माँ घर में रहकर भी गृह विरत हैं, निरंतर स्व-पर कल्याण में संलग्न है। धर्मध्यान की धुन में उसका अन्यत्र कहीं ध्यान ही नहीं है। अतः मैं अन्य लोगों की भाँति वह गलती नहीं करूँगा कि '**घर में आये नाग न पूजें बामी पूजन जाँय**' यह तो मेरा परम सौभाग्य ही है कि वे मेरी माँ भी है और सरस्वती माँ भी।

ऐसा विचार कर उसने निश्चय कर लिया कि ''मैं कल से प्रतिदिन प्रातः और शाम को एक-एक घंटे माँ के प्रवचनों में अवश्य बैठूँगा।''

अब वह अपनी माँ को माँ के रूप में कम और साक्षात् सरस्वती माँ के रूप में अधिक देखता है और भारी श्रद्धा भक्ति से उनके प्रवचनों को बड़े ध्यान से सुनता है एवं समझने की कोशिश करता है।

विराग ने सोचा ह्न ''जब तक वक्ता के प्रति श्रोता की ऐसी श्रद्धा भक्ति नहीं होगी और सम्पूर्ण समर्पण नहीं होगा एवं उनके प्रवचनों को ध्यान से नहीं सुनेगा तब तक उसे तत्त्वज्ञान का लाभ नहीं होगा।'' यही सोचकर विराग और चेतना ने माँ को गुरु जैसा बहुमान दिया।

एक दिन विराग ने माँ से अत्यन्त विनयपूर्वक निवेदन किया कि ह्न माँ ! धर्माचरण तो मैं आपकी प्रेरणा से बचपन से ही कर रहा हूँ, परन्तु उससे धन-वैभव आदि परपदार्थों के प्रति मेरा आकर्षण एवं ममत्व कम नहीं हुआ, क्रोधादि कषायें यथावत हैं, विषय-वासना की प्रवृत्ति भी पूर्ववत ही है, अतः मैं वह धर्म समझना चाहता हूँ जिससे इन सबसे मुक्ति मिले; क्योंकि इनके कारण आकुलता बनी ही रहती है, जबकि धर्म का फल तो निराकुलता है ह्न ऐसा मैंने छहढाला आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों में पढ़ा है।

विराग की गंभीर और महत्वपूर्ण समस्या के समाधान के रूप में माँ समताश्री ने धर्ममहल की नींव के पत्थर के रूप में वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त को समझाते हुए प्रवचन में कहा ह्न

''वर्तमान में मान्य 'विश्व' का स्वरूप मात्र उन कुछ देशों, द्वीपों तक ही मर्यादित है, सीमित है, जहाँ मानव जाति निवास करती है; जबकि वास्तविक विश्व का स्वरूप शास्त्रीय परिभाषा के अन्तर्गत 'छह द्रव्यों के समूहरूप कहा है। उन छह द्रव्यों में जीव अनन्त हैं, पुद्गल अनन्तानन्त है; धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य और आकाश द्रव्य एक-एक हैं तथा काल द्रव्य असंख्य हैं। इन अनादि-अनंत स्वतंत्र, स्वाधीन स्वावलम्बी स्वसंचालित द्रव्यों में जो अनन्त जीव द्रव्य हैं, उनमें हम भी एक द्रव्य हैं। इस कारण हममें भी उपर्युक्त सभी विशेषतायें घटित होती हैं अर्थात् हम भी अनादि-अनन्त, सम्पूर्ण रूप से स्वाधीन-स्वतंत्र, स्वावलम्बी हैं, किन्तु हम अपने इस मौलिक स्वरूप से अपरिचित हैं, अनभिज्ञ हैं, इस कारण जो स्वाभाविक कार्य-कारण व्यवस्था है, सहज-निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध हैं, उन्हें वैसा न मानकर उनमें अपना एकत्व एवं कर्तृत्व मान लेते हैं और हर्ष-विषाद करते हैं सुखी-दुःखी होते हैं और राग-द्वेष में पड़कर अपना संसार बढ़ाते हैं।''

माँ ने आगे कहा ह्न ''छह द्रव्य के समूह रूप त्रिलोकव्यापी अनादि-अनन्त स्व-संचालित विश्व के स्वतंत्र अस्तित्व का परिचायक 'वस्तुस्वातंत्र्य' का सिद्धान्त है, जो कि स्वाभाविक कार्य-कारण व्यवस्था और सहज निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध का मूल आधार है।

यह सिद्धान्त ही हमें सम्पूर्ण रूप से स्वावलम्बी बना सकता है; क्योंकि विश्व का कण-कण सम्पूर्णतः परनिरपेक्ष, स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वसंचालित एवं स्वावलम्बी है। उसे अपने अस्तित्व के लिए एवं परिणमन के लिए रंचमात्र भी पर के सहयोग की आवश्यकता नहीं है।''

प्रवचन के बीच में ही विराग बोला ह्न ''माँ ! यदि यह बात मैं पहले ही सुन/समझ लेता तो इतनी देर नहीं होती। जीवन का बहुभाग समय धर्म के नाम पर यों ही चला गया।''

माँ ने समाधान करते हुए कहा ह्न ''देर होती कैसे नहीं, प्रत्येक कार्य होने का अपना स्वकाल होता है, पर्यायगत योग्यता होती है जो काम जब होना होता है, तभी होता है, जिस उद्यम पूर्वक होना होता है, वैसा उद्यम भी उससमय अपनी तत्समय की योग्यता से होता है। जैसी होनहार होती है तदनुसार होता है, जिन निमित्त कारणों की उपस्थिति में होना होता है, वे सब कारण कलाप एक साथ सहज में मिलते चले जाते हैं, उसमें हमें, तुम्हें किसी को भी कुछ भी तो नहीं करना है ह्न यह चर्चा करते हुए माँ श्री ने काल पर बहुत जोर दिया। तथा 'काल' का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि काल का अर्थ तत्समय की योग्यता ही है।

इस हिसाब से तुम्हारी वस्तु स्वातंत्र्य की समझ का यही काल था, देर कहाँ हुई। शास्त्रीय शब्दों में कार्य के सम्पन्न होने की प्रक्रिया को पाँच समवायरूप कहा गया है ह्न वे इसप्रकार हैं ह्न स्वभाव, पुरुषार्थ, होनहार, काललब्धि और निमित्त। कार्य निष्पन्न होने में ये पाँचों कारण मिलते ही मिलते हैं। ऐसा ही वस्तु स्वरूप है और यह सब प्रक्रिया ऑटोमेटिक सम्पन्न होती है, इसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता।''

विराग को यह सब जानकर भारी संतोष हुआ। उसने कहा ह्न ''माँ मुझे अभी इस वस्तुस्वातंत्र्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानना है? एक सबसे अहं प्रश्न तो यह है कि ह्न 'वस्तु स्वातंत्र्य' को स्वीकार करने पर फिर अहिंसा/हिंसा करने न करने के उपदेश का क्या होगा? इस विषय में जितना सोचता हूँ, उतना ही उलझता जाता है, और सोचता हूँ कि धर्म के नाम पर जो अबतक किया, क्या वह सब भ्रम था। क्या मेरे साथ वह कहावत ही चरितार्थ हुई कि ''खोदा पहाड़ और निकली चुहिया' और वह भी मरी हुई।'' सचमुच ऐसा लगता है कि अब तक धर्म के नाम पर किया गया सारा श्रम व्यर्थ ही गया।

माँ ने कहा ह्न आज का समय समाप्त हो गया है, अब शेष चर्चा कल करेंगे। इसतरह सभा विसर्जित हुई, सभी कल की प्रतीक्षा में अपने-अपने घर की ओर चले गये। ●

बाल शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. चैतन्यधाम : यहाँ 3 से 10 जून तक श्री नाथलाल वेणीचंद शाह मुम्बई परिवार के सौजन्य से धर्मरत्न पण्डित श्री बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता अभिनन्दन स्मृति तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा श्री अमृतभाई चुन्नीलाल मेहता के निर्देशन में 15 वाँ बाल संस्कार शिविर आयोजित किया गया।

इस शिविर में पण्डित श्री बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित शैलेषभाई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित निखिलजी शास्त्री, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, पण्डित रत्नेशजी शास्त्री तथा विदुषी ब्र. ललिताबेन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में 143 विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर, उन्हें पुरस्कृत किया गया। प्रथम दिन श्री पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया, जिसमें 2200 मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही।

2. सुसनेर (शाजापुर) : यहाँ दिनांक 27 मई से 2 जून तक 24 तीर्थंकर मण्डल विधान, शिक्षण-शिविर एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान के तत्त्वावधान में किया गया।

शिविर में जयपुर से पधारे पण्डित रविजी शास्त्री एवं पण्डित सन्मतिजी शास्त्री तथा मंगलायतन से पधारे श्री अभिषेकजी एवं श्री प्रतीकजी ने बाल शिक्षण एवं विधान आदि कार्य सम्पन्न क राये। प्रतिदिन सायंकाल श्री माणकचंदजी भोपाल के समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। अंतिम दिन परीक्षा ली गई। सभी उत्तीर्ण छात्रों को श्री माणकचंदजी द्वारा पुरस्कृत किया गया। **– केसरीसिंह पाण्डे**

अध्यात्म जागरण शिविर सानन्द सम्पन्न

सिलबानी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 20 मई से 30 मई तक तारणतरण जैन युवा फैडरेशन द्वारा अध्यात्म जागरण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सम्पूर्ण श्रीसंघ सहित अध्यात्मयोगी बाल ब्र. बसन्तजी, पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री के प्रवचनों, बाल एवं प्रौढ़ कक्षाओं का लाभ मिला।

29 मई को विशाल जिनवाणी यात्रा निकाली गई तथा 30 मई को सामूहिक आमसभा का आयोजन किया गया।

शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सैक्टर - 7 स्थित दिगम्बर जिनमंदिर में झांझरी परिवार द्वारा दिनांक 17 मई से 31 मई तक छठवें शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन रात्रि में 8 से 9 बजे तक पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, श्रीमती ज्योति सेठी एवं श्री संजयजी सेठी द्वारा क्रमश: वीतराग-विज्ञान, छहढाला एवं बालबोध की कक्षायें संचालित की गई। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर श्री नथमलजी झांझरी की ओर से पुरस्कार वितरण किया गया।

इसीप्रकार श्री दि. जैन मंदिर, जनता कॉलोनी में भी दिनांक 20 से 30 मई, 05 तक पण्डित राजेशजी शास्त्री द्वारा जैन धर्म शिक्षा भाग-1 की कक्षा ली गई। दिनांक 30 मई को परीक्षा लेकर 2 जून को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि 3 जून से यहाँ दैनिक कक्षा का संचालन किया जा रहा है।

(पृष्ठ-1 का शेष ...)

तारणतरण चैत्यालय नागपुर में पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी, ✲ **शेंदुरजनाघाट** में पण्डित महावीरजी मांगुलकर, ✲ **महान** में पण्डित जितन्द्रजी चौगुले, ✲ **चांदुर रेल्वे** में पण्डित जितेन्द्रजी खड़ैरी, ✲ **रामटेक** में पण्डित अनिलजी बेलोकर, ✲ **कोंढाली** में पण्डित शीतलजी आलमान, ✲ **मोर्शी** में पण्डित अजितजी गढ़खेड़ा, ✲ **देवरी** में पण्डित देवेन्द्रजी बंड कलमेश्वर, ✲ **बोरगॉव मंजू** में पण्डित प्रवीणनाले का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग सभी स्थानों पर प्रतिदिन पूजन प्रशिक्षण, शास्त्र प्रवचन, बालकक्षा, प्रौढ़कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता था।

19 जून को नागपुर के ओसवाल भवन में शिविर का समापन रखा गया, जिसकी अध्यक्षता परमानंद धर्मशाला के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जैनी ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री जगन्नाथ-क्षेत्रीय प्रभारी रिलायंस इंफोकाम तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती बरखा पिंचा, श्री विकाश पिंचा, श्री बिज्जू पांडे एवं श्री शिखरचंदजी मोदी मंचासीन थे।

समारोह में महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्वप्रचार प्रसार समिति के सदस्य श्री विश्वलोचनजी जैनी, श्री संतोषजी पाटनी, श्रीमती प्रभा कासलीवाल, श्री संतोषजी सोनी, श्री प्रभाकरजी हनुमंते, डॉ. महावीरजी सोइतकर, श्री यशपालजी डबरे तथा पुरस्कार भेंटकर्ता श्री सिंघई नरेशजी जैन के करकमलों से प्रत्येक स्थान से प्रथम एवं द्वितीय आनेवाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर समस्त स्थानीय प्रभारियों एवं विद्वानों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली ने किया।

विर्दभ स्तर पर आयोजित शास्त्रसज्जा स्पर्धा तथा शाकाहार चित्रकला प्रतियोगिता का परिणाम भी घोषित हुआ तथा दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान पुलगॉव जिला वर्धा को प्राप्त हुआ।

शिविर का संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा तथा पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल के सशक्त दिशा निर्देशन तथा पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित प्रवेश 'प्रभु' करेली के योग्य संयोजन में हुआ।

संपूर्ण आयोजन में श्री अशोकजी जैन, श्री आदिनाथजी नखाते, श्री विजयजी मोदी, श्री जयकुमारजी देवडिया, श्री कमलाकरजी मारवडकर, श्री केशवरावजी लहाने तथा पण्डित दिग्विजयजी आलमान कोल्हापुर का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

आगामी शिविर श्री प्रियदर्शनजी गहाणकरी परिवार द्वारा लगाने की घोषणा की गई। **ह्न विश्वलोचनकुमार जैनी**

विधान सम्पन्न

धमतरी (रायपुर) : यहाँ दिनांक 10 जून को श्री महावीरस्वामी दि. जिनमंदिर में शांतिविधान का आयोजन किया गया। विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अशोककुमारजी एवं पण्डित प्रवीणकुमारजी रायपुर ने सम्पन्न कराये।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2005

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 13 जुलाई 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 14 जुलाई 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 15 जुलाई 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट -

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

श्रुत पंचमी पर्व सानन्द सम्पन्न

1. जयपुर : दिनांक 12 जून को दिगम्बर जैन परम्परा के महान पर्व श्रुत पंचमी के अवसर पर श्री.कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान पाठशाला, जौहरी बाजार द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में प्रात: पण्डित संतोषकुमारजी झांझरी के मार्मिक प्रवचन के पश्चात् पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में श्रुतस्कंध विधान का आयोजन हुआ।

रात्रि में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा का श्रुतपंचमी पर विशेष प्रवचन हुआ। साथ ही श्री दीपक गंगवाल एवं श्री अनुज शास्त्री के सहयोग से विशेष ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर पुरस्कार वितरित किये गये।

2. ललितपुर : यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर श्री सीमन्धर जिनालय, नजाई बाजार से प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई। तत्पश्चात् सामुहिक पूजन-प्रक्षाल की गई। प्रात: बच्चों के कार्यक्रम तथा शास्त्र भक्ति के उपरान्त पण्डित भानुकुमारजी के प्रवचन का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित कैलाशचन्दजी 'अचल' शिखरचन्दजी जैन (अनोरावाले) परिवार द्वारा शांति विधान का आयोजन किया गया।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, शास्त्र प्रवचन तथा रात्रि में पण्डित विकासजी शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

छहढाला वर्ष का समापन

सिद्धवरकूट : यहाँ श्री जवरचन्द ज्ञानचन्द पारमार्थिक ट्रस्ट, सनावद द्वारा सनावद, बैडिया, बडवाह, खण्डवा, पीपलगोन, पंधाना, कसरावद, मंडलेश्वर एवं मलकापुर में विगत एक वर्ष से आयोजित छहढाला वर्ष का समापन लगभग 450 व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

8 जून को सायंकाल विभिन्न नगरों की भक्ति प्रतियोगिता के पश्चात् पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में ज्ञानवर्धक छहढाला क्विज का आयोजन किया गया।

9 जून को प्रात: श्री बाहुबली मंदिर में सम्मेद शिखर विधान के पश्चात् पण्डित सुशीलकुमारजी इंदौर के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता श्री मनोहरलालजी काला ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री अशोकजी बडजात्या, श्री विजयजी बडजात्या एवं श्री पदमजी पहाडिया मंचासीन थे। समारोह के आयोजक श्रीमती कनकबेन अनंतभाई शाह मुम्बई थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों का निर्देशन पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री ने किया। इसी प्रसंग पर छहढाला वर्ष का सम्पूर्ण संचालन करने वाले पण्डित रितेशकुमारजी शास्त्री सनावद का सम्मान किया गया। पण्डित सुनीलकुमारजी भोपाल का सान्निध्य भी मिला।

जैन भूगोल शिविर सम्पन्न

देवलाली (नासिक) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट की ओर से दिनांक 2 जून से 5 जून तक जैन भूगोल शिक्षण-शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में डॉ. उज्ज्वलाशहा ने त्रिलोकसार के आधार से केवलीगम्य गम्भीर विषय को तत्त्वज्ञान के साथ सुमेल साधते हुये 20 प्रवचनों के माध्यम से सरल भाषा में समझाया।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 31

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

जब यह प्रश्न उपस्थित होगा कि राग आत्मा का है या पुद्गल का? तब प्रवचनसार यह कहेगा कि राग आत्मा का है और समयसार कहेगा कि राग पुद्गल का है। जब दोनों पक्ष न्यायालय में जाएँगे तो फैसला किसके पक्ष में जाएगा ?

प्रवचनसार का कथन वस्तुस्वरूप के आधार से किया गया कथन है और समयसार का कथन अपने प्रयोजन के सिद्धि की दृष्टि से किया गया कथन है।

किसी को कैन्सर हो गया है और वह अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। वह व्यक्ति छह माह के भीतर ही मर जायेगा। डॉक्टर का यह कहना वस्तुस्वरूप का कथन है।

और 'कोई चिन्ता की बात नहीं है, बिल्कुल ठीक हो जाओगे।' ऐसा आश्वासन इसलिए दिया जाता है कि उसे यह सुनकर हार्ट-अटैक न हो जावे, कम से कम वह कैन्सर से ही मरे, हार्ट अटैक होकर न मर जाएँ। यह कथन इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए किया गया कथन है।

यह सिद्धान्त और अध्यात्म की दृष्टि का अंतर है।

जैनेतर दर्शनों में कुछ दर्शन ऐसे हैं; जो कहते हैं कि सारा जगत मिलकर एक ही है और वह ज्ञायक ही है, वह चिद्विवर्त है; इनमें ब्रह्माद्वैत, ज्ञानाद्वैत एवं विज्ञानाद्वैत समाविष्ट हैं।

'सर्वं वै खल्विदं ब्रह्मनेह नानास्ति किञ्चनः।'

सम्पूर्ण जगत ब्रह्ममय है। 'सियाराममय सब जग जानी।' उन दर्शनों का आशय यह है कि हमें जो कुछ भी दिखाई दे रहा है; वह सब वस्तुतः कुछ भी नहीं है। यह सब हमारी ज्ञान की ही रचना है। इसमें जो कच्चा माल है, वह पुद्गल का नहीं है; वह हमारे ज्ञान का लगा हुआ है।

इसप्रकार अद्वैतवादी सम्पूर्ण जगत को ब्रह्ममय मानते हैं। वे कहते हैं कि वस्तुतः कुछ है ही नहीं, हमें जो दिखाई दे रहा है; वह सब माया ही है, भ्रम ही है। वे ऐसा मानते हैं कि यह भ्रम सब ज्ञान की ही पर्याय में उपस्थित होता है। इसी के आधार पर वे कहते हैं कि सम्पूर्ण जगत ब्रह्ममय है। सम्पूर्ण जगत एक है।

जैनदर्शन महासत्ता के रूप में उनके इस पक्ष को स्वीकार करता है। अस्तित्व नामक गुण सबके अन्दर विद्यमान है। बस! इतना ही जैनदर्शन का पक्ष है। इसे ही कथंचित् हम सब एक हैं ह्न ऐसा कहा जाता है; परन्तु यह सब असद्भूतव्यवहार की अपेक्षा है। इस अपेक्षा का यहाँ इतना कम वजन है कि इसे यहाँ 'असद्भूत' यह नाम दिया गया है।

हमारा पर के साथ जो संबंध है; वह महासत्ता के आधार पर है अथवा मात्र जानने के आधार पर है। इसे आचार्यदेव ने इस ग्रन्थ की २३वीं गाथा में स्पष्ट किया है ह्न

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं।
णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगयं ।।२३।।

आत्मा ज्ञानप्रमाण है, ज्ञान ज्ञेयप्रमाण कहा गया है, ज्ञेय लोकालोक है; इसलिए ज्ञान सर्वगत ह्न सर्वव्यापक है।

इसकी चर्चा ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन अधिकार में कर चुके हैं।

जैनदर्शन में यह महासत्ता की विवक्षा कथंचित् है और इस विवक्षा से हम सब एक हैं। हमने सबको जाना अर्थात् सब आत्मा के हो गये। आत्मा सर्वगत हो गया और सब पदार्थ आत्मगत हो गये। इस अपेक्षा में वजन असद्भूतव्यवहारनय का है।

द्रव्य-गुण-पर्याय से युक्त स्वरूपास्तित्ववाली वस्तु ही असली इकाई है। इसकी विस्तार से चर्चा पूर्व में हो चुकी है।

यहाँ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य के संदर्भ में सभी यही समझते हैं कि पूर्व पर्याय का व्यय, उत्तर पर्याय का उत्पाद और वस्तु की ध्रुवता ह्न यही उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य है।

प्रवचनसार में इस बात पर अधिक वजन दिया है कि तीनों का समय एक है अर्थात् एक समय में तीनों हैं। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य तीनों प्रतिसमय प्रत्येक द्रव्य में विद्यमान है। गुण और पर्याय भी प्रतिसमय विद्यमान रहते हैं। वस्तुतः कोई ऐसा समय नहीं है कि जब ये सब उस वस्तु में नहीं रहते हों। जिनमें ये नहीं रहते हैं; वह वस्तु ही नहीं है, अर्थ ही नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि जैनदर्शन में अपेक्षा लगाकर सबकुछ कहा जा सकता है; पर यह बात सत्य नहीं है; क्योंकि हम ऐसी अपेक्षा का प्रयोग नहीं कर सकते हैं कि आत्मा कथंचित् चेतन है और कथंचित् अचेतन भी है। अचेतनत्व नाम का कोई धर्म आत्मा में है ही नहीं। जो धर्म वस्तु में होता है, अपेक्षा सिर्फ उन्हीं धर्मों पर लगती है, दूसरे धर्मों पर नहीं लगती है।

प्रथम उस वस्तु में वह धर्म है या नहीं ह्न यह देखना पड़ेगा, तभी उसमें अपेक्षा लगेगी, अन्यथा नहीं।

४७ नयों का अध्ययन करेंगे तो पता चलेगा कि वस्तु में अभाव नामक एक गुण है, धर्म है, स्वभाव है, शक्ति है।

नास्तित्व धर्म की मात्र इतनी ही विवक्षा नहीं है कि पर मैं नहीं हूँ, उसका यह भी कार्य है कि इसमें किंचित्मात्र भी पर का प्रवेश नहीं हो। वह मजबूत वज्र की दीवार है।

जब 'पूर्वपर्याय' ऐसा कहा गया; तब उसमें अनादिकाल से लेकर अबतक की सभी पर्यायें सम्मिलित होती हैं।

निगोद से यह जीव दो हजार सागर के लिए त्रसपर्याय में आता है। यह जीव इस दो हजार सागर में दो तिहाई काल देवगति में बिताता है एवं एक तिहाई काल नरक में बिताता है।

इससे यह सिद्ध है कि प्रत्येक जीव का सर्वाधिक काल देवलोक में ही बीतता है।

यदि यहाँ कुछ भी नहीं करेंगे और फिर से एकेन्द्रिय पर्याय में जाएँगे तो भी हमारा दो-तिहाई काल देवलोक में ही बीतना है। अब दुनिया में जो अभी छह अरब व्यक्ति दिखाई देते हैं; उनमें से दो-तिहाई लोग कौन-से हैं, जो देवगति में जायेंगे ?

यहाँ हमारे प्रवचन में आनेवाले जीव शुद्ध एवं सात्त्विक जीवन बितानेवाले लोग हैं ह्न यदि ये लोग ही देवगति में नहीं जायेंगे तो क्या मांसभक्षी लोग देवगति में जायेंगे ?

इसलिए भाई हम सबकी तो देवगति में जाने की गारंटी है; इसलिए

चिंता करने की बात नहीं है। यहाँ देवगति प्राप्त करने के लिए यह चर्चा नहीं चलती है, यहाँ तो मोक्षमार्ग की चर्चा चलती है, जो महादुर्लभ है। उसी के लिए यह सम्पूर्ण प्रयत्न है। यह सब देवगति के लिए नहीं है। देवगति तो मुफ्त में ही मिलनेवाली चीज है।

अब दुनिया में जितने जीव-जंतु दिखाई देते हैं; उनमें नारकी तो देवगति में जाते नहीं और देव भी देवगति में नहीं जाते। अब जो मनुष्य और तिर्यंच शेष हैं; उनमें तिर्यंचों से अधिक मुख्यता मनुष्य को ही मिलेगी।

अब जो आज के इस विश्व में छह अरब मनुष्य दिखाई दे रहे हैं; उनका आचरण, खान-पान और श्रद्धा देखकर यह कहा जा सकता है कि जैनियों को तो देवलोक मिलेगा ही।

पूर्व पर्याय का व्यय और उत्तर पर्याय का उत्पाद। यहाँ पूर्व पर्याय की अपेक्षा उत्तरपर्याय और उत्तरपर्याय की अपेक्षा पूर्वपर्याय नाम दिया जाता है। स्थिति तो यह है कि उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य प्रतिसमय विद्यमान है। उत्पाद भी सत् है, व्यय भी सत् है एवं ध्रौव्य भी सत् है। 'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्तं सत्' इसमें तीनों के मिश्रण का नाम सत् है।

बिना प्रयत्न के प्रतिसमय पलटना ह्न यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है; जो प्रतिसमय प्रत्येक द्रव्य में होती रहती है। आत्मा भी एक द्रव्य है; इसलिए वह भी प्रतिसमय पलटता रहता है।

कई व्यक्ति ऐसा कहते हैं कि मुझे कुछ नया करना है, मुझे अपनी इमेज बनानी है; तब आचार्य कहते हैं कि अरे भाई! प्रतिसमय सबकुछ नया ही उत्पन्न होता है, पुराना कुछ होता ही नहीं है। प्रतिसमय नूतन रूप में उत्पन्न होना ह्न यह प्रत्येक वस्तु का स्वभाव है।

पंचवटी में सीता व राम अंदर कुटिया में सोए हुए थे और लक्ष्मणजी पहरेदारी कर रहे थे। वे पहरेदारी करते हुए सोच रहे हैं कि भाई ! हमने जिंदगी में क्या किया है ? कुछ भी तरक्की, उन्नति नहीं की है।

'मैथिलीशरणजी गुप्त' इन शब्दों में लक्ष्मण के अभिप्राय को व्यक्त करते है ह्न

'यदि परिवर्तन ही उन्नति है, तो हम भी बढ़ते जाते हैं।'

यदि उन्नति का अर्थ परिवर्तन है तो हमारी भी उन्नति हो रही है; क्योंकि प्रतिसमय परिवर्तन हो ही रहा है। हमारी यह तरक्की ही है कि हम राजपाठ छोड़कर जंगल में आ गये हैं।

इस परिभाषा के द्वारा तो हम भी प्रतिसमय बढ़ रहे हैं। जब यहाँ आए थे तो २५ वर्ष के थे और अब ५ वर्ष के पश्चात् ३० वर्ष के हो गए। क्या हमने २५ से ३० वर्ष का होने के लिए कुछ किया था ? कुछ नहीं करो तो भी हम प्रतिसमय बढ़ रहे हैं। यदि बढ़ना ही उन्नति है, तरक्की है तो तरक्की होते-होते ही हम बड़े हो गये हैं और तरक्की होते-होते ही मर जायेंगे। यह भी तो एक बढ़ना है। जब अंतिम समय आता है तो उसे नाश क्यों कहा जाता है ? जब ८० वर्ष की उम्र तक बढ़ते गए तो कहते हैं कि इनका अनुभव बढ़ा, ज्ञान बढ़ रहा है। भाई! ये तो बहुत बड़े आदमी हो गए और अंतिम समय में उसे ही 'मरे' ह्न ऐसा कहा जाता है।

प्रतिसमय नूतन उत्पाद होना ह्न यह इस जीव का स्वभाव है एवं पुराना नष्ट होना भी इसका स्वभाव है।

आचार्य कहते हैं कि यह जीव कभी पूर्णत: नष्ट न होकर भी प्रतिसमय परिवर्तित होता रहता है।

कालिदास ने सुन्दरता को इसी आधार पर परिभाषित किया है ह्न

'क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदीयरूपं रमणीयताया:।'

जो क्षण-क्षण में नया-नया लगे उसी का नाम रमणीयता है। मोक्षमार्गप्रकाशक जितने बार पढ़ते हैं; उतनी बार नया-नया लगता है, नये-नये प्रमेय ख्याल में आते हैं।

इस भगवान आत्मा में प्रतिक्षण नूतन उत्पाद होता है।

मैं आपसे ही पूछता हूँ कि नई चीज अच्छी होती है कि पुरानी ?

चावल पुराने अच्छे होते हैं, सब्जी नई ताजी अच्छी होती है।

यदि पुराने अच्छे होते हों तो यह भगवान आत्मा इतना पुराना है कि जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं और यदि कोई कहे कि भाईसाहब! हमें पुराना बिल्कुल पसंद नहीं है, तब आचार्य कहते हैं कि आत्मा इतना नया है कि एक समय भी पुराना नहीं है।

नया होकर भी पुराना है और यह पुराना होकर भी नया है। ऐसा इस वस्तु का स्वभाव है। ऐसी कोई विचित्र महिमा इस वस्तुस्वरूप में पड़ी है। यह सामान्यज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापनाधिकार का विषय है।

अब इसकी चर्चा गाथा १११ से ११३ के आधार पर करते हैं।

यहाँ प्रश्न यह है कि सत् का उत्पाद होता है या असत् का ?

इस प्रश्न का आशय यह है कि जो उत्पन्न हुआ है, उसकी सत्ता पूर्व में थी या वह सर्वथा नया पैदा हुआ है ?

कुछ लोग इसपर कहेंगे कि जो वस्तु थी, उसका पैदा होने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता और कुछ लोग कहते हैं कि यदि नई चीज पैदा होती है तो गधे का सींग भी पैदा होना चाहिए। यदि गुलाब का फूल खिलता है तो आकाश का फूल भी खिलना चाहिए।

गाय के सिर पर सींग पैदा होता है; परंतु गधे के सिर पर नहीं होता। गाय के सिर पर जो सींग उठा, वह गाय के माथे में पहले था; इसलिए वह उगा अर्थात् वहाँ वे तत्त्व विद्यमान थे। जो बच्चा है, उसके होठों में वे तत्त्व विद्यमान हैं, जिनमें से मूँछे निकलेगी; लड़कियों में वे तत्त्व विद्यमान नहीं हैं।

लड़कियों में वे तत्त्व विद्यमान हैं, जिनके कारण उनके विशिष्ट अंग विकसित होते हैं। लड़कों में ऐसे तत्त्व विद्यमान नहीं हैं कि जिनके कारण उनके विशिष्ट अंग विकसित हों। जब वे दोनों पैदा होते हैं; तब भले ही वे अंग दिखाई नहीं देते हों तो भी सम्पूर्ण जगत इसे जानता है।

मूल प्रश्न यह है कि सत का उत्पाद है या असत् का उत्पाद ?

पहले मूँछे नहीं थी और फिर मूँछे उगी; इसलिए असत् का उत्पाद है।

यदि वह वस्तु नहीं थी तो केवली भगवान ने ऐसी वस्तु को कैसे जाना, जो नहीं थी। मान लीजिए कुछ विशिष्ट दिनों के बाद हमें केवलज्ञान होनेवाला है। यदि भगवान महावीर से इस बारे में पूछा जाता तो वे बता सकते थे। इससे आशय यह है कि उस समय ऐसी कोई चीज विद्यमान थी; जिसके आधार पर यह जाना गया कि केवलज्ञान होगा।

वह सत् था, इसलिए स्वकाल में प्रगट हो गया; इसलिए सत् का उत्पाद है, द्रव्यदृष्टि से हर पर्याय सत् का उत्पाद है और पर्यायदृष्टि से देखें तो असत् का उत्पाद है ह्न यह मुख्य विषय है, जिसे १११वीं गाथा के भावार्थ में स्पष्ट किया है। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

सार समाचार

➔ रिलायंस इंडस्ट्रीस में पिछले सात महीनें सें मालिकाना हक को लेकर चल रहें विवाद का पटाक्षेप बटवारें के रूप में हुआ। रिलायंस इंडस्ट्रीस एवं आई.पी.सी.एल. मुकेश अंबानी के खाते में तथा रिलायंस केपिटल, रिलायंस एनर्जी एवं रिलायंस इन्फोकॉम अनिल अंबानी के खाते में।

➔ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक श्री के.एस.सुदर्शन ने भूतपूर्व कांग्रेसी प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के साहस की प्रशंसा करके एक नये विवाद को जन्म दिया।

➔ जयपुर के प्रसिद्ध नमकीन व्यवसायी युवराज पाण्ड्या (जैन) की 22 जून, प्रात: 11 बजे सेठी कॉलोनी जैनमंदिर के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई। मुख्य मंत्री सहित अनेक राजनेताओं ने उनके घर जाकर परिजनों को सांत्वना दी।

➔ फरवरी-2006 में आयोजित होनेवाले महामस्तकाभिषेक में लगभग 15 से 16 लाख लोगों के उपस्थित होने की संभावना को मद्देनजर रखते हुये तैयारियाँ चरम पर।

➔ पाकिस्तानी केन्द्रिय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री शेख रशीद अहमद की 30 जून को श्रीनगर-मुजफ्फराबाद बस सेवा से भारत आने की अर्जी को उनके आतंकवादियों को प्रशिक्षण में मदद करने की बात का खुलासा होने की वजह से भारत सरकार ने नामंजूर किया।

➔ पुलवामा (श्रीनगर) में 13 जून को कार में हुये बम विस्फोट से 21 लोगों की मृत्यु तथा अनेक घायल।

➔ राजनैतिक रंग बदलते हुये बहुजन समाजपार्टी की अध्यक्ष सुश्री मायावती ने ब्राह्मण आरक्षण की मांग की।

➔ सहेला (राज.) में पानी की मांग कर रहे ग्रामीणों पर पुलिस बल द्वारा की गई अंधाधुंध फायरिंग से पाँच लोगों की मृत्यु एवं 46 अन्य व्यक्ति घायल। घटना के पश्चात् ग्रामीणों के विरोध के कारण एस. पी. एवं कलेक्टर का निलम्बन किया गया।

➔ जयपुर में जे.एल.एन. मार्ग पर 350 करोड़ रुपयों की लागत से 1 लाख स्क्वायर यार्ड के ऐरिया में दक्षिण-एशिया का पहला वर्ल्ड ट्रेड पार्क बनाने की घोषणा।

➔ बावड़ी, कूए, तालाब सफाई हेतु राजस्थान पत्रिका, जयपुर की ओर से चलाये जा रहे अमृतम् जलम् अभियान के तहत एक बावड़ी की खुदाई के दौरान बच्चों को सम्वत् 1660 की भगवान पार्श्वनाथ की साढे 11 इंच की पूजनीय प्रतिमा प्राप्त हुई।

➔ नक्सल वादियों के हमले में नागपुर के उप-पुलिस निरीक्षक श्री किरणकुमार दिगम्बर राव धोपाड़े (जैन) शहीद हुये।

➔ जन संघ के संस्थापक पूर्व राज्यपाल श्री सुन्दर सिंह भण्डारी का दिनांक 22 जून को दिल्ली में निधन।

28 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

रविवार, 31 जुलाई से मंगलवार, 9 अगस्त, 05 तक

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार, 9 अगस्त, 2005 तक बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा।

शिविर पण्डित ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा एवं श्री अमृतभाई मेहता के निर्देशन में सम्पन्न होगा।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी को धर्मलाभ लेने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

※ पर्यूषण हेतु आमन्त्रण शीघ्र भेजें ※

दशलक्षण पर्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूगर, जयपुर से प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र 31 जुलाई, 2005 तक भेजें; ताकि तदनुसार निर्णय करके निर्धारित स्थानों की सूची शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता पिन कोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी. कोड सहित अवश्य लिखें। यदि मोबाइल नं. हो तो वह भी लिखें।

देखना ना भूलें !

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन सोमवार से शनिवार तक प्रतिदिन रात्रि 10.25 से 10.45 बजे तक देखना ना भूलें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जुलाई (प्रथम) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127